उत्पत्ति 3:16: अपराध के बाद हव्वा से कहे गए परमेश्वर के वचन

Hans-Jörg Ronsdorf · मई 2021 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

बाइबल में अध्याय 3 के पद 16 वाले पद बड़े वज़नदार हैं। केवल यूहन्ना 3:16 ही नहीं, मूसा की पहली पुस्तक का यह पद भी। ऐसे और भी उल्लेखनीय 3:16 पद हैं, जो निश्चय ही संयोग है, क्योंकि अध्यायों का विभाजन और उनकी गिनती बाद में, तेरहवीं शताब्दी में, और पदों का विभाजन और उनकी गिनती सोलहवीं शताब्दी में ही जोड़ी गई थी।

हमारी रुचि इस बात में है कि हव्वा से कहे गए वे वचन, जब उसने वर्जित फल खा लिया था और आदम को भी दे दिया था, **क्या अर्थ रखते हैं और क्या अर्थ नहीं रखते**। यह बात महत्वपूर्ण है या नहीं, यह मेरे लेख के अंत में दिखाई देगा। यहाँ इस पद के कुछ अनुवाद हैं:

> उसने स्त्री से कहा: मैं तेरे गर्भ की कठिनाई को बहुत बढ़ाऊँगा, तू पीड़ा के साथ बच्चे जनेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, परन्तु वह तुझ पर प्रभुता करेगा। (Elberfelder CSV – जर्मन बाइबल अनुवाद)
>
> और स्त्री से उसने कहा: जब तू गर्भवती होगी, तो मैं तुझे बहुत कष्ट दूँगा; कष्ट के साथ तू बच्चे जनेगी। और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, परन्तु वह तेरा स्वामी होगा। (Luther 2017 – जर्मन बाइबल अनुवाद)

इन शब्दों से मैंने हमेशा यही निष्कर्ष निकाला और यही अर्थ लगाया, शायद आपकी तरह ही: परमेश्वर हव्वा को उसके अपराध का दंड इस प्रकार देता है कि प्रसव अत्यधिक कठिन और पीड़ादायक हो जाता है। और: अपने पति की ओर मुड़ने में उसका सामना ऐसे व्यक्ति से होता है जो उस पर प्रभुता करता है। यदि लूथर के शब्दार्थ ("वह तेरा स्वामी होगा") का अनुसरण करें, तो यह प्रभुता परमेश्वर द्वारा चाही गई एक पदानुक्रम-व्यवस्था है: पुरुष सिर, स्त्री एक सहायक।

इस वचन में एक तरह से दिशा तय होती है: हम स्त्री को, और उसके कार्य के महत्व, उसके उद्देश्यों और उसके दोष को किस दृष्टि से देखते हैं? इसमें (जैसा कि अक्सर होता है) अनुवाद की भूमिका को कम नहीं आँका जा सकता।

इन दोनों अनुवादों में **कष्ट और गर्भ** दो संज्ञाएँ हैं जिन्हें आपस में जोड़ा जाता है या एक-दूसरे से संबंधित किया जाता है। परन्तु यदि इस पद को Einheitsübersetzung या Zürcher Bibel (जर्मन बाइबल अनुवाद) में पढ़ें, तो एक महत्वपूर्ण बात ध्यान में आती है:

> स्त्री से उसने कहा: मैं तेरे लिए बहुत कष्ट तैयार करता हूँ **और** तू बार-बार गर्भवती होगी। पीड़ा के साथ तू बच्चे जनती है। तुझे अपने पति की लालसा है और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। (Einheitsübersetzung)
>
> स्त्री से उसने कहा: मैं तुझे बहुत कष्ट देता हूँ **और** तेरे गर्भों को अनेक करता हूँ, पीड़ा के साथ तू बच्चे जनेगी। तू अपने पति की लालसा करेगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। (Zürcher Bibel)

अंतिम दोनों अनुवादों में कष्ट और गर्भ का सीधे-सीधे एक-दूसरे से कोई संबंध नहीं है। अर्थात **दो चीज़ें** बढ़ाई जाती हैं: कष्ट और गर्भ।

जैसा कि इब्रानी पढ़ने वाले एक व्यक्ति ने मेरे सामने पुष्टि की, स्पष्ट और शाब्दिक रूप से लिखा है: "... बढ़ा-बढ़ाकर बढ़ाऊँगा मैं तेरे परिश्रम को और तेरे गर्भ को ..."।

एक भावानुवाद इसे इस प्रकार कहता है: मैं तेरे कठोर परिश्रम को और तेरे गर्भों को दुगना और कई गुना करता हूँ; बड़ी कठिनाई और संकट के साथ तू बच्चे जनेगी, फिर भी तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।

मेरी दृष्टि में इस महत्वपूर्ण विशेषता की ओर मेरा ध्यान ब्रूस फ़्लेमिंग (Bruce Fleming) की एक पुस्तक से गया[1], जो इस पद को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं:

> **मैं निश्चय ही कई गुना बढ़ाऊँगा (1) खेत में तेरे कठिन परिश्रम को और (2) तेरे गर्भधारण को।**

फिर परमेश्वर स्त्री को उस बारे में समझाता है जो उसके साथ और उन दोनों के साथ हुआ है, अब जब वे नश्वर और पतित हो गए हैं।

> **परिश्रम के साथ तू बच्चे जनेगी**
>
> **तेरी [प्रेमपूर्ण] लालसा तेरे पति की ओर [है]**
>
> **परन्तु वह [स्वयं पर विद्रोही रूप से प्रभुता करता है और] तुझ पर प्रभुता करेगा।**

पद 16 के पहले भाग में यह भेद क्यों महत्वपूर्ण है? क्योंकि इससे हव्वा से कहे गए वचनों का स्वर बिल्कुल बदल जाता है, और इससे भी महत्वपूर्ण, उनकी विषय-वस्तु बदल जाती है। **सबसे पहले यह पहचानना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के इस संबोधन में हव्वा पर कोई शाप नहीं आता। बिल्कुल इसके विपरीत!** सबसे पहले उससे पहले से कहा जाता है कि खेती-बाड़ी के संबंध में उसे बहुत परिश्रम और मेहनत करनी पड़ेगी; इसमें पशुपालन और जीवन चलाने वाला अन्य हाथ का काम भी शामिल है। "कष्ट" (परिश्रम) शब्द इस रूप में केवल तीन बार आता है और हमेशा खेत में कठिन परिश्रम का अर्थ देता है। आदम इसे इसी रूप में सुनता है (उत्पत्ति 3:17): भूमि तेरे कारण शापित है: "तू जीवन भर **कष्ट** के साथ उसकी उपज खाया करेगा।" और बाद में लेमेक अपने पुत्र नूह के विषय में यही कहता है (उत्पत्ति 5:29): "यह उस भूमि के कारण, जिसे यहोवा ने शाप दिया है, हमारे काम और हमारे हाथों के **परिश्रम** के विषय में हमें शान्ति देगा।"

आदम ने निषेध को पूरी तरह जानते हुए बस हव्वा से फल लिया और खा लिया। परन्तु परमेश्वर का शाप आदम पर नहीं पड़ता। शाप भूमि पर पड़ता है। **अदन में एक बार फिर अनुग्रह।** परिणाम है भोजन उत्पन्न करने में कष्ट। अदन के विपरीत, जीवन अब जीवित रहने का संघर्ष बन जाता है। और क्योंकि हव्वा उसी भूमि पर रहती है, और वे पति-पत्नी के रूप में साथ मिलकर जीवन चलाने के मार्ग पर हैं, इसलिए उस पर भी वही परिश्रम आता है जो आदम पर। इसका कारण हव्वा नहीं, बल्कि आदम है, क्योंकि उसके कार्य के कारण भूमि शापित हुई है।

परन्तु अब, पहले वाक्य के दूसरे भाग में, शुभ संदेश आता है, सुसमाचार। गर्भ बढ़ाए जाएँगे!

अपराध के बावजूद हव्वा सृष्टि का आदेश पूरा कर सकती है: फूलो-फलो और बढ़ो और पृथ्वी को भर दो! अपराध के बावजूद जीवन आगे बढ़ेगा। बहुत से वंशज होंगे। इससे भी महत्वपूर्ण, इन वंशजों में से एक साँप का सिर कुचल देगा। साँप ने सबसे पहले ये वचन सुने, जो परमेश्वर उससे कहता है:

> [उत्पत्ति 3:15] और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।

इन वचनों को आदि-सुसमाचार या प्रोटो-सुसमाचार (प्रोटोएवेंजेलियम) कहा जाता है। **परन्तु ये शैतान से कहे गए हैं, और उसके लिए यह निश्चय ही कोई शुभ संदेश नहीं है।** फिर साँप को यह भी सुनना पड़ता है कि परमेश्वर यह सुनिश्चित करता है और इसकी गारंटी देता है कि वंशज होंगे, कि स्त्री का वंश होगा। हव्वा के लिए यह शुभ संदेश है, वैसे ही आदम के लिए और हमारे लिए भी, जो बगीचे में साथ-साथ सुनने का अवसर पाते हैं।

इस प्रकार हव्वा से कहे गए वचनों को एक बिल्कुल भिन्न, सकारात्मक, आशा भरा अर्थ मिलता है।

बच्चे जनना हव्वा के लिए कठिन होगा, जैसे आदम के लिए खेती। पतन के बाद जीवन बदल गया है। जब हव्वा ने ये वचन सुने, तब तक उसने कोई बच्चा नहीं जना था। साँप और आदम शाप और दंड के वचन सुनते हैं, एक "पहले" और एक नकारात्मक "बाद में"। हव्वा नहीं! जब परमेश्वर अदन में उससे बात करता है, तो वह स्त्री के शरीर को नहीं बदलता। फिर भी कुछ अनुवाद ऐसे लगते हैं मानो परमेश्वर स्त्री को किसी तरह बदल देता है और जनने को एक बुरी चीज़ में बदल देता है।

बच्चे जनना एक जोखिम भरी प्रक्रिया है, जब तक कि आज संसार के कई भागों की तरह चिकित्सा की सुविधाएँ उपलब्ध न हों। परन्तु परमेश्वर स्त्रियों के पक्ष में खड़ा है। वह उनका सहायक और उद्धारकर्ता है (1 तीमुथियुस 2:15)।

एक दृष्टान्त की भाषा में यीशु ने अपने चेलों से कहा – और हम यह मान सकते हैं कि वह वही है जिसने बगीचे में हव्वा से बात की थी:

> [यूहन्ना 16:21] जब स्त्री जनने लगती है तो उसे कठिनाई होती है (या: क्लेश), क्योंकि उसकी घड़ी आ पहुँची है; परन्तु जब वह बालक को जन्म दे चुकती है, तो इस आनन्द के कारण कि संसार में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, वह उस संकट (या: पीड़ा) को फिर स्मरण नहीं करती।

पद 16-19 में लेखक मानव अस्तित्व की कठोरताओं का हिसाब देता है, विशेष रूप से जीवन के सृजनात्मक पहलू का: संतानोत्पत्ति और भोजन के उत्पादन का। पहले वाली निश्चिन्तता अब कष्ट के साथ मिल जाती है: अच्छा (वंशज, भोजन) बुरे (कष्ट) के साथ आता है।

संबंध का टूटना

उन दोनों के संबंध की कल्पना किस रूप में की गई थी? "दो अर्थपूर्ण इब्रानी शब्दों, **ezer kenegdo**, में परमेश्वर बताता है कि वे दोनों एक-दूसरे के लिए कैसे ठहराए गए हैं। वे एक-दूसरे के लिए रचे गए हैं, केवल कुछ घंटों के अंतर से। जैसे ही वे साथ होते हैं, उन्हें एक फलदायी और संतुष्ट जोड़ा बनना है, जो साथ मिलकर अदन की वाटिका में घर बसाए हुए है। ... **ezer kenegdo** वह है जो बराबरी का है, एक प्रतिरूप (जोड़ीदार), वह जो दूसरे के साथ मिलकर काम करता है, क्योंकि वे अपनी शक्तियों को बाँटकर एक-दूसरे की सहायता करते हैं। ... यह शब्द दो व्यक्तियों का चित्र बनाता है जो एक-दूसरे के आमने-सामने खड़े हैं। इसका अनुवाद "आमने-सामने", "प्रत्यक्ष रूप से सामने", "अनुरूप" या "समान" किया जा सकता है।"[2]

परमेश्वर का यह उद्देश्य अब पूरा नहीं होता। अब दोनों पर कष्ट आता है और अंत में मृत्यु। उन दोनों का संबंध भी अब पहले जैसा नहीं रहा। हव्वा अपने बच्चों के पिता की ओर मुड़ती है, उस पर भरोसा करती है, उसके पक्ष में रहना चाहती है। परन्तु पुरुष जाति, जो शारीरिक रूप से अधिक बलवान है, बिना किसी ईश्वरीय अधिकार-पत्र के अगुवाई की भूमिका अपने हाथ में ले लेती है। वह स्वयं को स्त्री से ऊपर रखती है, उसका शोषण करती है और

उसे दबाती है। संसार के इतिहास ने इसकी लाखों बार पुष्टि की है, निस्संदेह, हमेशा की तरह, उन अपवादों को छोड़कर जो बार-बार और हर जगह रहे हैं और हैं।

हव्वा ने कैसा व्यवहार किया था?

उसे बहकाया गया था, झूठे और मनुष्यघाती ने उसे छल से फँसाया था। जब परमेश्वर ने इसके बाद उससे बात की, तो वह उसकी ओर संकेत करती है जिसका दोष सबसे बड़ा था: साँप।

> [उत्पत्ति 3:13] तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा: तूने यह क्या किया है! स्त्री ने कहा: **साँप ने मुझे बहका दिया, तब मैंने खाया।**

हव्वा स्वयं को साँप से अलग करती है, उस पर दोष लगाती है। वह बड़ा अपराध, जिससे हव्वा एक हिमस्खलन शुरू कर देती है, बहकावे के द्वारा हुआ। और वह मान लेती है कि उसने खाया। उसका रवैया आदम के रवैये से कहीं अधिक अच्छा है। उसके अपराध की मात्रा की तुलना आदम के अपराध से नहीं की जा सकती।

"परमेश्वर ने स्त्री से पूछा, जैसा कि उत्पत्ति 3:13 में लिखा है: 'तूने क्या किया है?' **उसने परमेश्वर को बिना किसी बहाने के उत्तर दिया। उसने परमेश्वर को बिना किसी आरोप के उत्तर दिया। वह पुरुष से बिल्कुल अलग ढंग से बोली।** वह अब और धोखा नहीं खा रही थी। शायद जब उसने सुना कि परमेश्वर पुरुष से कैसे प्रश्न कर रहा है, तब उसे सब कुछ स्पष्ट हो गया। जो भी हो, अब उसने देख लिया कि क्या हुआ था। अपनी नई बुद्धि में उसने बुराई को पहचाना और कहा: 'साँप ने मुझे बहका दिया, तब मैंने खाया।' इस उत्तर से उसने दुष्ट साँप को अपने धोखे के स्रोत के रूप में उजागर कर दिया। और उसने वह बुराई स्वीकार की जो उसने धोखे में रहते हुए की थी – 'तब मैंने खाया।' क्या उसने भी और अधिक बुराई की, जैसा कि पुरुष ने अभी-अभी किया था? नहीं। क्या उसने उस पुरुष पर दोष लगाया जो उसके साथ था? नहीं। क्या उसने परमेश्वर पर दोष लगाया? नहीं। फिर भी बाइबल हमें उसके विषय में जो बताती है, वह उस ढंग से मेल नहीं खाता जिसमें उसे अक्सर प्रस्तुत किया जाता है। और उसका यह गलत चित्रण बहुत लंबे समय से चला आ रहा है।"[3]

अदन में हर एक ने एक कौर खाया। परन्तु उनकी अवज्ञा की मात्रा अलग-अलग थी। हर एक के हृदय में जो चल रहा था, वह एक जैसा नहीं था।

आदम लगभग हठ के साथ प्रतिक्रिया करता है, उससे भी बुरा, दोष लगाते हुए:

> [उत्पत्ति 3:12] आदम ने कहा: **जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को दिया है, उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैंने खाया।**

आदम सबसे पहले दोष हव्वा पर डालता है। और परमेश्वर पर। यह लगभग परमेश्वर के विरुद्ध एक अभियोग है, मानो सृष्टिकर्ता स्वयं दोषी हो। इससे वह परमेश्वर की अपेक्षा साँप के अधिक निकट खड़ा होता है। हव्वा आदम की अपेक्षा परमेश्वर के अधिक निकट खड़ी है। इस प्रकार इन क्षणों में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका भी हव्वा को मिलती है: उसका एक वंश होगा (आदम का नहीं), जो सब कुछ उलट देगा और एक नई और बेहतर अदन का कारण बनेगा। वहाँ, जहाँ परीक्षा में डालने वाला कोई फिर नहीं होगा।

बहकाने वाला

अपने आक्रमण के बाद साँप भाग नहीं सकता। परमेश्वर साँप से बात करता है और उससे कहता है: तू जानता है कि तू मुसीबत में पड़ने वाला है! मैंने सुना कि स्त्री ने अभी क्या कहा। और उसके शब्द सच थे। तूने उससे झूठ बोला और उसे धोखा दिया, और उसने अभी-अभी तेरे कामों को प्रकट कर दिया है। मैं उसे और तुझे विरोधियों के रूप में पुष्ट करता हूँ। तू उसके वंश की एड़ी को डसेगा। परन्तु उसका वंश तुझे नष्ट कर देगा। तेरे सिर को।

शैतान परीक्षा में डालने वाला था। उसने स्त्री और पुरुष दोनों को बहकाया।[4] उत्पत्ति 3:1-5 का इब्रानी पाठ दिखाता है कि जब-जब वह "तुम" कहता है, वह बहुवचन सर्वनाम का प्रयोग करता है। दूसरे शब्दों में, उसने अपने शब्द केवल स्त्री से नहीं कहे। उसने कहा "तुम-दोनों", "तुम-सब", "तुम-दोनों ही"। और पुरुष वहीं था और उसने सुना जो वह कह रहा था।

वह परमेश्वर पर आक्रमण करता है और सत्य को तोड़-मरोड़ देता है! वह इस बात से इनकार करता है कि वे सचमुच परमेश्वर के स्वरूप और समानता में रचे गए थे। वह एक जवाबी प्रस्ताव रखता है। यह फल खाओ, तब तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे। वह ऐसा दिखाता है मानो वह उसे अच्छा ज्ञान दे रहा हो। जो वह वास्तव में दे रहा है, वह यह है कि वे भले और बुरे को जानें![5]

सारांश

मुझे आशा है कि कुछ हद तक यह स्पष्ट हो गया होगा कि हव्वा से कहे गए वचनों की व्याख्या कितने अलग-अलग ढंग से की गई है। हर एक व्याख्या, या व्याख्या के चश्मे, के द्वारा नए नियम के वे पाठ जो हव्वा के विषय में हैं, एक निश्चित "रंग" पा लेते हैं। ये केवल दो अंश हैं:

> [2 कुरिन्थियों 11:2-3] क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में परमेश्वर की सी धुन लगाए रहता हूँ; क्योंकि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुँवारी के समान मसीह को सौंप दूँ। परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई से जो मसीह के प्रति है, कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ।
>
> [1 तीमुथियुस 2:12-15] और मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर प्रभुता करे, परन्तु चुपचाप रहे, क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई; और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई। तौभी बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम और पवित्रता में स्थिर रहें।[6]

बहकाया जाना एक वास्तविक खतरा है। हव्वा इसका एक उदाहरण है। इसलिए नहीं कि स्त्रियाँ अधिक आसानी से बहक जाती हैं। यह बात पाठ से निकाली नहीं जा सकती। वह इस बात का एक प्रभावशाली उदाहरण है कि ऐसा कुछ कैसे घटित हो सकता है। बहकाया जाना और धोखा खाना स्त्रियों की समस्या नहीं, बल्कि मनुष्यों की समस्या है। इसके लिए नए नियम में इन शब्दों को देखिए, जहाँ बात हमेशा सब की होती है, पुरुषों और स्त्रियों दोनों की।

पतन की ज़िम्मेदारी आदम को उठानी होगी। हव्वा एक पीड़ित थी (और निस्संदेह फिर भी ज़िम्मेदार)। आदम एक अपराधी था। उसने "ऊँचे हाथ से" (जान-बूझकर) पाप किया। आँखें खोलकर और परमेश्वर की आज्ञा को पूरी

तरह जानते हुए उसने फल खाया। वह, न कि हव्वा, पतित मानवजाति का सिर बनता है (रोमियों 5; 1 कुरिन्थियों 15), यद्यपि हव्वा सब जीवितों की माता है।

"जब परमेश्वर वृक्ष के पास उन तीनों का न्याय करता है, तो अपने न्याय के वचनों में वह पुरुष को शैतान के साथ रखता है।[7] परमेश्वर स्त्री के साथ इन दोनों विद्रोहियों से अलग व्यवहार करता है, क्योंकि वह जान-बूझकर विद्रोह नहीं करती। वह बहकाए जाने के बाद ही आज्ञा तोड़ती है।"[8]

हव्वा को, उसके कार्य और उसके शब्दों को, कोई कैसे समझता है, इसका रंग उस दृष्टि पर चढ़ जाता है जो वह स्त्रियों के विषय में रखता है। यह लेख इसी उद्देश्य से लिखा गया था: बिल्कुल आरंभ की ओर एक बार फिर नए सिरे से देखना।

Hans-Jörg Ronsdorf, 25 मई 2021 hj-ronsdorf@t-online.de

टिप्पणियाँ

1. Fleming, Bruce; Fleming, Joy; Hagemeyer, Joanne. The Book of Eden, Genesis 2-3: God Didn't Curse Eve (or Adam) or Limit Woman in Any Way। किंडल संस्करण, पृ. 96।
2. Fleming, The Book of Eden, पृ. 33।
3. Fleming, The Book of Eden, पृ. 56।
4. जब पौलुस दो बार कहता है कि हव्वा बहकाई गई, तो इसका कारण यह है कि उसने पहले बात की, प्रतिक्रिया दी और कार्य किया (2 कुरिन्थियों 11:3; 1 तीमुथियुस 2:14)।
5. तुलना करें: Fleming, The Book of Eden, पृ. 54।
6. इस पद के विषय में मैंने विस्तार से लिखा है (अपनी पुस्तक "स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए!" ("Frauen, vergebt uns!"), अध्याय 6.3 में): यह स्त्रियों के लिए शिक्षा देने का कोई सार्वभौमिक निषेध नहीं है, बल्कि इफिसुस की एक ठोस समस्या है, जहाँ तीमुथियुस को पौलुस की यह पत्री मिली थी। पौलुस की चेतावनी यह है: कोई भी, चाहे स्त्री हो या पुरुष, जिसे सिखाया नहीं गया और जिसने सीखा नहीं, उसे दूसरों को नहीं सिखाना चाहिए या वह सिखा नहीं सकता। न कलीसिया की सभा में, न कहीं और। क्योंकि दूसरी पत्री में वह स्पष्ट कहता है: [2 तीमुथियुस 2:2] "और जो बातें तूने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी लोगों (यूनानी: anthropos; मनुष्य: पुरुष और स्त्रियाँ) को सौंप दे, जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों", चाहे कलीसिया की सभा में हो या बस किसी भी स्थान पर, सीखने के इच्छुक किसी भी श्रोता के लिए। इस वचन से पौलुस स्वयं का खंडन नहीं करता, जब वह यहाँ स्त्रियों को भी सिखाने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि यह दिखाता है कि इफिसुस में एक स्त्री या कुछ स्त्रियाँ समस्या थीं, जैसे कि पुरुष भी हो सकते थे (परन्तु उस स्थिति में ऐसा नहीं था)।
7. यह साँप और आदम से कहे गए वचनों की समानता से भी स्पष्ट होता है।
8. Fleming, The Book of Eden, पृ. 110।